ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 109-110

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

प्रेमचन्दः लोक जीवन के कथाकार

विद्या कुमारी
अध्यापिका– हिन्दी विभाग, अनुग्रह कन्या विद्यालय, गया (बिहार), भारत

Received- 24.07.2020, Revised- 28.07.2020, Accepted - 03.08.2020 E-mail: - dr.ramanyadav@gmail.com

सारांश : ***"प्रेमचन्द की गणना संसार के महान कथा शिल्पियों में होती है।" प्रेमचन्द न केवल एक व्यक्तित्व का बल्कि हिन्दी साहित्य में एक युग का नाम भी है। कोई युग जब किसी के नाम को ही अपनी संज्ञा मान लेता है– तो उस युग की दृष्टि में उनका क्या महत्व है यह बताने की जरूरत नहीं रह जाता है, युग द्वारा की गई इस दो टूक समीक्षा के आधार पर हम उन्हें निर्विवाद रूप से अपने युग का सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार कहेंगे। उनकी यह श्रेष्ठता अपनी भाषा और अपने देश तक ही सीमित नहीं रह जाती– हिन्दीत्तर भाषाओं और भारतेतर देशों तक फैल जाती है। उनकी यह श्रेष्ठता युग की देहली के पास आद्यतन अछुन्न बनी रहती है। इस श्रेष्ठता का आधार उनका लोक जीवन का कथाकार हैं***

कुंजीभूत शब्द– संसार, शिल्पियों, व्यक्तित्व, हिन्दी साहित्य, युग की दृष्टि, समीक्षा, निर्विवाद रूप, सर्वश्रेष्ठ ।

प्रेमचन्द के पूर्व भारतीय वाड़मय लोक कथाओं की सुदीर्घ परम्परा देखने को तो मिलती है, पर वे कथाएं या तो परियों के देश की हैं या तिलस्मी दुनियॉ की उसमें जीवन से जुड़ने की प्रवृत्ति अत्यन्त न्यून है। जितनी कुछ है– वह राजा–रानी के जीवन के रंगीनियों के जीवन के छोटे से टुकड़े मात्र से संबद्ध है। उसे "लोक कथा" के प्रसंग में आज भी जिससे–तिससे कह सुन लेते हैं पर वह फकत लोक कथा है– लोक जीवन की कथा नहीं है।

प्रेमचन्द हिन्दी के प्रथम सर्वोत्कृष्ठ मौलिक लेखक थे। उन्होंने हिन्दी पाठकों की अभिरूची को चन्द्रकांता के गर्त से निकालकर सुदृढ़ साहित्यिक नींव पर स्थित किया। इसके अतिरिक्त प्रेमचंद जी ने समाज के असाधारण वर्गों की ओर से दृष्टि हटाकर मध्यम तथा निम्न श्रेणी के लोगों की ओर हिन्दी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। किसान, मजदूर, क्लर्क, दुकानदार, जमींदार, साहुकार, अफसर और पूँजीपतियों के संघर्ष का जैसा जीवित रूप में प्रेमचंद जी ने चित्रण किया है, वैसा उससे पहले हिन्दी साहित्य में कभी नहीं हुआ था।"

लोक जीवन की कथा का सामान्य प्रचलित अर्थ है– जन जीवन की कथा। इस जनजीवन की कथा के अन्तर्गत साधारण से साधारण व्यक्ति भी अभिव्यक्ति का अवसर पा सकते हैं, नायकत्व का बीड़ा उठा सकता है। उसमें पात्रों का असाधारण होना आवश्यक नहीं। प्रेमचन्द ने हिन्दी के माध्यम से पहली बार पूरे विस्तार के साथ लोक जीवन की गहराई में उतरने की कोशिश की "उन्होंने पात्रों के साधारणत्व में ही वैशिष्ट्य और स्मणीयत्व के अन्वेषण का प्रयास किया, इस प्रयास में वे इतने सफल हुए कि हिन्दी साहित्य में ही उन्हें विशिष्टता नहीं मिली वरन् अपने युग के समस्त साहित्यकारों में अग्रणी और महान हो गये।" संक्षेप में, मगर उनकी विविध आयामी विशेषताओं को व्याख्यांकित करना चाहें तो कहेंगे कि डिकेंस गाल्सवर्दी, गोर्की, चेख्व मोपास, रवीन्द्र, शरत इत्यादि साहित्यकारों की पूंजी चेतना का नाम ही प्रेमचन्द है।

प्रेमचन्द के लोक जीवन का फलक इतना विस्तृत है कि उसमें किसी भी जाति, धर्म, वर्ग की अवस्था की संकीर्ण परिधि दृष्टिगोचर नहीं होती है। सम्पूर्ण समाज की हर इकाई को जगह ही गई है वास्तविक स्वरूप और आंतरिक मर्म को अविकृत अभिव्यक्ति दी गई है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शबें में– "अगर आप उत्तर भारत का समस्त जनता के आचार विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आशा आकांक्षा, सुख दुख और सूझ–बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचन्द से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता। झोपड़ियों से लेकर महलों तक खोमचेवालों से लेकर बैंकों तक गॉव से लेकर धारा सभाओं तक आपको इतने कौशल पूर्वक और प्रामाणिक भाव से कोई नहीं ले जा सकता। आप बेखटके प्रेमचन्द का हांथ पकड़कर मेड़ों पर गाते हुए किसान को अंतःपुर में मान किये बैठी प्रियतमा को कोठे पर बैठी हुई वार–वनिता को रोटियों के लिए ललकते हुए भिखमंगों को कूट–परामर्श में लीन गोयन्दों को, ईर्ष्या परायण प्रोफेसरों को, दुर्बल–हृदय बैंकरों को, साहस परायण देख सकते हैं और निश्चित होकर विश्वास कर सकते हैं कि जो आपने देखा है, वह गलत नहीं है।" प्रेमचन्द का कलाकार इतना सजग है उसकी दृष्टि इतनी सूक्ष्म है कि वह असहाय शिशुता से लेकर असमर्थ बुढ़ापे तक के बीच

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

की हर सांस को सिद्धान्त रहित भाषा की आकृति देता चला गया है। वे न तो तेबर को उपेक्षित छोड़ देते हैं–न बूढ़ी काकी को निराश। पंच परमेश्वर से इमार की बात उगलवाने का आदर्श भी उनके पास है और कफन के धीसू माधव का यथार्थ भी ''नया विवाह'' की आशा की वशता भी है, पूस की रात के हल्कू की विवशता भी कर्तव्य निष्ठा की व्यवस्तता भी है और शतरंज के खिलाड़ी की, नमक के दरोगा, गुल्ली डण्डा के लिए अवकाश भी है 'दूध का दाम' पाने का प्रयास भी राय साहब की सम्पन्नता के साथ होरी की विपन्नता भी है। अलगू चौधरी की दोस्ती जुम्मन शेख से भी चल सकती है और सिलवा मतादीन से भी प्यार कर सकती है।

प्रेमचंद के सम्पूर्ण साहित्य के अनुशीलन से जो निष्कर्ष निकलता है– वह स्पष्टतः उनके लो जीवन के कथाकार होने की घोषणा करता है। उनका साहित्य एक ऐसा अलबम है जिसमें भारतीय जन जीवन की विपुल झांकियॉ देखने को मिल जाती है। उसमें हिन्दी प्रदेश ही नहीं हिन्दीतर प्रदेश के जीवन के चित्र हैं। प्रेमचन्द साहित्य के प्रेरक उपादान जन जीवन के ही वैसे सब चरित्र हैं जो आज भी हर गॉव हर समाज और हर प्रदेष में मौजूद है– और कल भी रहेगा। उनका कथा–नायक हर रोज हर किसी की ऑखों के आगे से कई–कई बार आ खड़ा होता हे। वहीं नाक–नक्शा, वहीं चेहरा–मोहरा और वे सारी ही परिस्थितियॉ होने जौ पढ़ा है। ठीक वैसा ही लोक जीवन का ऐसा सजीव, सटीक और मनोहारी चित्रांकन हम अन्यत्र कहीं नहीं पाते। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य का विषय ही वैसे स्थल को बनाया है जहां बेशुमार कथाऍ बिखरी हैं। यद्यपि दुसरे साहित्यकारों ने भी लोक जीवन के चित्र उरेहने का प्रयास किया है ''प्रेमचन्द काल्पनिक कथाकारों द्वारा ऐसे भाव–लोक की सृष्टि नहीं करना चाहते जो उसके वास्तविकता सामाजिक सन्दर्भों का झूठा चित्र उपस्थित करता।'' प्रेमचन्द में एक साथ चेख की मनोवैज्ञानिकता, टाल्सटाय की सादगी, मोपांसा की घटना प्रियता के अलावे दोस्तोवस्की का यथार्थ है और गोर्की की सामाजिकता भी।

लोक जीवन का कथाकार होने के लिए जिस सामाजिकता की जरूरत होती है वह प्रेमचन्द में इतनी है कि उसकी तुलना में न तो कोई समकालीन साहित्यकार ठहरते हैं, न परवर्त्ती हिन्दी कथाकार। सामाजिकता डिफेन्स के साहित्य में कम नहीं है, पर जहां वह केवल नागरी सभ्यता में सिमटी रहती है, वहॉ प्रेमचन्द में ग्रामीण जीवन में संचरण करती है। यहां तक की मालती और मेहता भी उसके आकर्षण से अछूते नहीं रह सकते। सच यह है कि प्रेमचन्द ने ग्रामीण और शहरी सभ्यता के किनारों के बीच से प्रवाहित जीवन धारा का संतुलित चित्रण किया है। गोर्की की तुलना में प्रेमचन्द में जीवन की सर्वांगीनता एवं विविधता है। रवीन्द्र की सामाजिकता ग्राम्यांचल में निवास करने के बावजूद व्यक्तिनिष्ठ है, प्रेमचन्द समष्टि में फैले हुए हैं। परिवार के चित्रण में शरत भी कत नहीं है पर उनका परिवार संकुचित है, प्रेमचन्द का विस्तृत सम्पूर्ण देश ही उनका परिवार है। सामाजिक यथार्थ के चितेरे दोस्तोवस्की भी हैं और प्रेमचन्द भी पर, दोस्तोवकी का यथार्थ जीवन को अन्ततः एक नैराश्यपूर्ण वातावरण में छोड़ जात है, और प्रेमचन्द वहां भी आशा के किसी उगते सूरज का आभास प्रायः छोड़ जाते हैं।

हिन्दी में प्रेमचन्द के अलावे चोटी के कथाकार और भी हैं– जैनेन्द्र, राजा राधिकारमण, जोशी, यशपाल, अज्ञेय, कमलेश्वर, मिथिलेश्वरा, मालती जोशी आदि। पर इन लोगों में वैसा वैविध्य विस्तृत नहीं है, इनके प्रेरक उपादान भी लोक जीवन के कम ही है इसमें कहीं दर्शन, वहीं मनो विश्लेषण कहीं सिद्धान्त, कहीं बुद्धिवाद तो कहीं सेक्सवाद है। ये प्रान्तियता की सीमा लांघने की कूबत भी नहीं रखते और ''लोक जीवन'' के कथाकार कहलाने का दावा भी नहीं कर सकते। यों तो रेणु, नागार्जुन, शिवपुजन सहाय आदि अपने को सर्वाधिक योग्य दावेदार मान सकते हैं, पर आंचलिकता की सीमा उन्हें भी मजबूर कर देती है। सांस्कृतिक एकता का जैसा विस्तार प्रेमचन्द में है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। उक्त विवेचन विश्लेषण के बाद निष्कर्ष के तौर पर हम कहेंगे कि प्रेमचन्द लोक जीवन के कथाकार हैं, और उस चोटी के जिसकी ऊंचाई को पार करना तो दूर, छू सकते का भी सामर्थ्य अब तक के किसी कथाकार में नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गल्पत्र भारती– पृ0 24 सं0. रामधारी सिंह दिनकर मोतीलाल बनारसी दास प्र0।
2. डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा का कथन– हॅस' प्रेमचन्द स्मृति अंक पृ0 800
3. डॉ0 केसरी कुमार के उद्धार– प्रेमचन्द जयंती समारोह– 1980 स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय।
4. हिन्दी साहित्य पृ0 435।
5. मार्कण्डेय द्वारा लिखित भूमिका– प्रासंगिक कहानियॉ– प्र0 13 लो भारती प्रकाशन।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*